शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

किशनगढ़ शैली की चित्राकृतियों की समीक्षा

प्राप्तिः 07.03.2022
स्वीकृतः 17.03.2022

रेनू सिंह
शोधार्थी, ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
ईमेलः *enchanted.r.singh@gmail.com*

सारांश

विश्व की चित्रकला में भारतीय चित्रकला अपना निजी व महत्वपूर्ण स्थान रखती है चित्रकला की इस पंक्ति में अजंता की परम्परा को बनाये रखने वाली राजस्थानी चित्रकला का अपना निजी सांस्कृतिक परिवेश व इतिहास है। राजस्थानी चित्रकला का विकास सम्पूर्ण भारत चित्रकला केन्द्रों में मेवाड़, मारवाड़, हाडौती, ढूढाड में विभाजित किया गया है जिनके अन्तर्गत शैलियाँ, उपशैलियाँ व ठिकाने आदि आते हैं।

राजस्थानी चित्रकला के अन्तर्गत मारवाड़ क्षेत्र को द्वितीय केन्द्र के रूप में माना जाता है। मारवाड़ केन्द्र के अन्तर्गत किशनगढ़ के कलाकारों द्वारा कुछ प्रमुख चित्राकृत्तियों को निर्मित किया है। इन कलाकृत्तियों की रेखाएँ बारीक, सशक्त, गतिपूर्ण, अलंकारिक व अभिव्यक्तिपूर्ण प्रयोग की गयी है। ये चित्राकृत्तियाँ परम्परागत शास्त्रीय शैली पर आधारित है तथा यहाँ की कृतियाँ विभिन्न सम्राटों के शासनकाल में ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनैतिक, भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों को लेकर चित्रित की गई है। यहाँ के कलाकारों द्वारा भित्ति चित्रण व लघुचित्रण जो विभिन्न पद्धतियों के माध्यम से किया गया। भारतीय चित्रकला के इतिहास में राजस्थानी चित्रकला अपने कलात्मक चित्रांकन से ही प्रसिद्ध रही है।

विश्व की चित्रकला में भारतीय चित्रकला अपना निजी व महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अजंता के विश्व प्रसिद्ध भित्ति चित्र इस काल की अमर धरोहर हैं। पाल, बौद्ध, जैन, अपभ्रंश, राजस्थानी, पहाड़ी एवं मुग़ल आदि शैलियों ने भारतीय चित्रकला के गौरव को ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से वर्तमान तक संजोकर रखा है। चित्रकला की इस पंक्ति में अजंता की परम्परा को बनाये रखने वाली राजस्थानी चित्रकला का अपना निजी सांस्कृतिक वातावरण व इतिहास है।

राजस्थानी चित्रकला का विकास सम्पूर्ण राजस्थान में अलग–अलग स्थानों पर विभिन्न परिस्थितियों में हुआ है। राजस्थानी चित्रकला को चार केंद्रों में (1) मेवाड़ स्कूल (2) मारवाड़ स्कूल (3) हाड़ौती स्कूल (4) ढूँढाड़ स्कूल में विभाजित किया गया है। इन चार शैलियों की भौगोलिक संरचना और राजपूत राजवंशों की सांस्कृतिक परम्पराओं ने विशिष्टता प्रदान की है, वे सहज ही झलकती है। जिनके अंतर्गत शैलियाँ, उप शैलियाँ व ठिकाने आते हैं।

राजस्थानी चित्रकला के अंतर्गत मारवाड़ क्षेत्र को राजस्थानी चित्रकला का द्वितीय केंद्र के रूप में माना जाता है। इसके अंतर्गत जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, अजमेर एवं नागौर आदि स्थल आते हैं। राजस्थानी चित्रकला को अपनी विशिष्ट शैली प्रदान करने वाला किशनगढ़ राज्य के 2200 वर्ग कि. मी.

के क्षेत्र में विस्तृत क्षेत्रफल में फैला हुआ है। किशनगढ़ राजस्थान के लगभग मध्य में स्थित है। किशनगढ़ की स्थापना ई. सन् 1609 में महाराजा किशनसिंह द्वारा की गई थी। इन्हीं के नाम पर यह राज्य किशनगढ़ के नाम से प्रसिद्ध हो गया। मारवाड़ केंद्र के अंतर्गत किशनगढ़ के कलाकारों द्वारा कुछ प्रमुख चित्राकृतियों को निर्मित किया है जिनका वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है –

'राधा (बनी–ठनी)', गोपियों संग नृत्य करते राधा–कृष्ण, कृष्ण का राधा को प्रणय निवेदन, प्रेमी युगल'

राधा (बनी–ठनी)

यह कलाकृति चित्रकार निहालचंद द्वारा किशनगढ़ कलम में सन् 1760 ई. में कागज पर जल वर्णों में चित्रित की गई है। यह कृति सम्राट सावंत सिंह के दरबार की नृतिका बनी–ठनी पर आधारित दर्शायी गई है। सम्राट राधा–कृष्ण का भक्त था। राजा ने अपने दरबार की नृतिका को बनी–ठनी नाम दिया था।

यह कलाकृति राजस्थान कला में किशनगढ़ शैली की चित्रकारी का उत्कृष्ट नमूना निहालचंद की कृति किशनगढ़ की राधा बनी–ठनी का अर्थ है (सजी–धजी) आकृति का मुखमंडल ऊँचा एवं ढलावदार माथे के साथ विकसित लंबी नासिका, उभरे होंठ, खंजनकृत नेत्र, कमानीदार भौंहे, लंबे बाल, कंधों और कमर तक फैले हुए चित्रांकित किये गये हैं तथा दायें हाथ की पतली उँगलियों से पारदर्शी चुनरी का किनारा थामे हुये है। इसके बायें हाथ में दो श्वेत गुलाबी रंग की कमल की कलियाँ हैं।

वस्त्रों और आभूषणों पर तत्कालीन राजपूती शान–शौकत का प्रभाव दर्शाया गया है। गले में बहुत सी सफेद मोतियों की माला, कानों में झुमके, माथे पर माँग टीका, नाक में नथनी, हाथ में चूड़ियाँ, कंगन व लटकनयुक्त बाजूबंद चित्रित किये गये हैं।

यह कलाकृति उत्तम रंग व्यवस्था से सुसज्जित है। यह विश्वप्रसिद्ध

कलाकृति मानी जाती है, इसे 'भारतीय मोनालिसा' भी कहा जाता है। इसकी तुलना पाश्चात्य कलाकार लियोनार्डो दा विंची की कलाकृति मोनालिसा से की जाती है। भारत सरकार ने बनी–ठनी चित्र पर डाक टिकट भी जारी किया है। इस कृति में रेखाएँ लयपूर्ण बारीक व सौंदर्यपूर्ण दृष्टव्य है।

गोपियों संग नृत्य करते राधा–कृष्ण

यह चित्राकृति किशनगढ़ शैली में सन् 1820 ई. में चित्रित की गई है। इसका माध्यम कागज पर टेंपरा है। इस कृति के मध्यम भाग में गुलाबी वर्ण की पृष्ठभूमि में गोपियों के साथ नृत्य करते राधा–कृष्ण दर्शाये गये हैं। श्रीकृष्ण ने राधा के गले में दोनों हाथ डाल कर पकड़ रखा है और नृत्य करते हुये राधा–कृष्ण की नजर गोपियों के ऊपर प्रदर्शित है, कृष्ण के बायी और एक गोपी हाथ ऊपर उठाये नृत्य करने की मुद्रा में अंकित की गई है।

यहाँ पर मानवाकृतियों का लम्बा छरहरा शरीर, नुकीली नासिका, गौर वर्ण (स्त्री आकृति) व नील वर्ण (कृष्ण), खंजनाकृत नेत्र बनाये गये हैं और धनुषाकार भौंहे, लम्बे केश दर्शाये गये हैं। इस चित्र में राधा की वेशभूषा में पीला, लाल वर्ण का अलंकृत लहंगा, हरे रंग की चोली व पीली गोटेदार पारदर्शी चुनरी निर्मित है। अतः श्रीकृष्ण सन्तरी पायजामी व भूरे रंग का पटका शरीर पर बाँधे चित्रित किया गया है व आभूषणों में राधा–कृष्ण कानो में झूमके, माथे पर टीका, नासिका में नकफूल, हाथों में अलंकृत बाजूबंद, कंगन, चूडियाँ, छल्ला व अंगूठी अंकित की गई है। गले में मालाएँ, पैरों में पायल, बिछिया व सर पर अलंकृत मुकुट दर्शाया गया है।

चित्र के मध्य भाग में दायी तरफ दो गोपियाँ हरी घास युक्त पृष्ठभूमि पर बैठी मुद्रा में अंकित की गई है। दोनों के मुखमंडल आपस में एक दूसरे के सम्मुख चित्रित किये गये हैं। दोनों गोपियों के हाथ वार्तालाप की मुद्रा में दिखाई पड़ते हैं। ये आकृतियाँ सफेद व पीले लहंगे, हरी घास व फूलों से युक्त पेड़–पौधे अंकित किये गये हैं। मध्यभाग के अग्रभाग के जलाशय से गोलाईनुमा डिजाईन में बादामी रंग की एक पट्टी द्वारा अलग किया गया है। कलाकृति के पृष्ठभाग, आसमान को गहरे स्लेटी, गुलाबी, पीले, हरे आदि वर्णों द्वारा बनाया गया है। यह चित्र बहुत ही सौन्दर्यात्मक ढंग से बनाया गया है। इस कृति में कोमल, बारीक व भावपूर्ण रेखाएँ प्रयोग की गई हैं।

कृष्ण का राधा को प्रणय निवेदन

यह चित्राकृति सन् 1750 ई. में किशनगढ़, शैली में निर्मित की गई। इस कृति को दो भागों में चित्रित किया गया है। अग्रभाग व पृष्ठभाग। इसमें निर्मित सफेद भवन के सम्मुख आँगन में एक अलंकरण युक्त ऊँचे बिस्तर पर श्रीकृष्ण पैरों के पीछे की ओर मोड़कर बैठी मुद्रा में अंकित है। इनकी नजर सामने खड़ी राधा पर है। राधा की चुनरी का एक पल्लू श्रीकृष्ण ने बाये हाथ से पकड़ रखा है और श्रीकृष्ण का दायाँ हाथ वार्तालाप की मुद्रा में ऊपर उठा हुआ है। राधा की नजर भी श्रीकृष्ण पर टिकी दर्शायी गई है तथा राधा ने अपने बायें हाथ से चुनरी का दूसरा पल्लू पकड़ रखा है और दायाँ हाथ कृष्ण द्वारा पकड़े पल्लू के निकट चित्रित है। अतः दोनों (राधा–कृष्ण) के मुखमंडल पर प्रेमभाव दर्शाया गया है। कृष्ण के मुखमंडल के पीछे प्रभाव मण्डल चित्रित किया गया है।

यहाँ पर मानवाकृतियाँ ऊँचा एवं ढलावदार चेहरा, लम्बी नाक, नेत्र, उभरे होंठ, कमानीदार भौंहे, लंबे केश, कन्धों व कमर तक फैले हुए चित्रांकित किये गये हैं। राधा को अलंकृत जिस पर लाल रंग से अलंकरण हुआ मनसद चित्रित है तथा बिस्तर पर सफेद रंग की चादर व लाल रंग बिस्तर की मोटाई वाले भाग को पीले वर्ण से अलंकरण किया गया है। राधा के पीछे की तरफ भूरे, पीले व लाल रंगो से सुसज्जित एक भवन बना है। इस कलाकृति के आँगन में श्रीकृष्ण के निकट एक चौकी पर दो तोते एक कला व दूसरा भूरे रंग का दोनों अपने–अपने पिंजरे में अंकित हैं। कृति के अग्र भाग में बायी और दो हिरण चित्रित हैं तथा दायी ओर दो बगुले दर्शाये गये हैं। इस चित्राकृति का चित्रण बहुत ही सौन्दर्यात्मक ढंग से किया गया है और बारीक एवं लयपूर्ण रेखाओं का प्रयोग देखने को मिलता है।

प्रेमी युगल

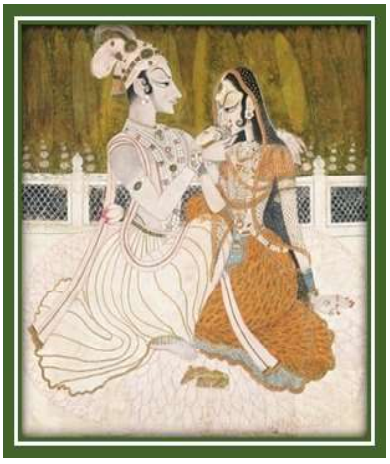

यह चित्राकृति 18 वी शताब्दी में किशनगढ़ शैली में चित्रित की गई है। इसमें धरातल के अग्र भाग में डिजाईन युक्त एक छोटी दीवार निर्मित है। जिसके सामने श्रीकृष्ण और राधा प्रेमालाप की मुद्रा में एक कमल के पुष्प के डिजाईन से युक्त एक गोलाकार कालीन पर बैठे चित्रांकित किये गये हैं। श्रीकृष्ण ने बायें हाथ की दो अंगुलियों से राधा की ठोड़ी को छू रहा है और कृष्ण का दायाँ हाथ पीछे की ओर से राधा के कन्धे के निकट चित्रित किया गया है तथा राधा के बायें हाथ की एक अँगुली अपनी ठोड़ी पर कृष्ण के हाथ की अंगुली पर लगी निर्मित है और राधा का दायाँ हाथ धरातल पर रखा अंकित किया गया है तथा राधा का मुखमंडल और आँखें लज्जा से थोड़ा नीचे की ओर झुकी हुई दृष्टव्य है किन्तु श्रीकृष्ण की नजरे पूर्णतः राधा पर ही टिकी है जिससे दोनों के मध्य प्रेमभाव परिलक्षित होता है।

इस कृति में मानवाकृतियों में नारी विशेष रूप से कमसिन बाला की तरह लज्जा से झुकी हुई लंबी छरहरे बदन वाली चित्रित की गई है और वर्ण खंजनाक नेत्र, नुकीली नाक, हिंगुल पतले अधर, धनुषाकार भौंहे निर्मित की गई हैं। तथा पुरुषाकृति का पतला लम्बा बदन, पतले होंठ, खंजनाकृत नेत्र, गौर वर्ण चित्रित किया गया है। राधा के आभूषणों में नासिका में मोतीयुक्त नथ, बालों की एक झूलती लट, माथे पर माँग टीका, गले में मोतियों की मालाएँ, कानों में झूमके, हाथों में लटकनयुक्त बाजूबंद, कंगन, चूड़ियाँ, अंगुठी व हाथफूल पहने अंकित की गई है तथा लटकनयुक्त कमरबंद भी निर्मित है।

राधा की वेशभूषा में पीला अलंकृत लहंगा, बॉर्डर युक्त सन्तरी चोली एवं पीली गोटेदार पारदर्शी चुनरी ओढ़े दर्शायी गयी है। तथा कृष्ण के गले में छोटी बड़ी अनेक मालाएँ, कानों में कुंडल, माथे पर तिलक, सिर पर अलंकृत मोरपँख युक्त मुकुट, हाथों को अलंकृत बाजूबंद व पैरों में पायल अंकित की गई है। कुछ आभूशण श्रीकृष्ण व राधा के सम्मुख कालीन पर रखे चित्रित किये गये हैं। इस कृति की पृष्ठभूमि अलंकृत पेड़–पौधों का अंकन किया गया है। जिसमें केले के पेड़ों की अधिकता परिलक्षित होती है। इसमें लयात्मक, गतिमय, बारीक रेखाओं का प्रयोग किया गया है।

किशनगढ़ शैली में चित्रांकित कृतियों का वर्णन दिया गया है तथा ये कृतियाँ राजस्थानी चित्रकला के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन कलाकृतियों की रेखाएँ बारीक, सशक्त, गतिपूर्ण, आलंकारिक एवं अभिव्यक्तिपूर्ण प्रयोग की गई है।ये चित्राकृति परम्परागत शास्त्रीय शैली पर आधारित है तथा यहाँ की चित्राकृतियाँ विभिन्न राजाओं के शासनकाल में ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनैतिक, भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों को लेकर चित्रित की गई हैं। यहाँ के राजाओं ने अपने–अपने राजपाठ में देवालय, भवन, हवेली, महल, छतरी, बावड़ी, किला आदि में कलाकारों द्वारा भित्ति चित्र एवं लघु चित्रांकन कराया जो विभिन्न पद्धतियों के माध्यम से किया गया। भारतीय चित्रकला के इतिहास में राजस्थानी चित्रकला अपने सौंदर्यात्मक चित्रांकन से ही कला जगत में अद्वितीय है।

संदर्भ

1. प्रताप, डॉ. रीता. (2011). जयपुर की चित्रांकन परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
2. अग्रवाल, आर. ए. (1974). कलाविलास (भारतीय चित्रकला का विवेचन) मेरठ।
3. द्विवेदी, डॉ. प्रेम शंकर. (2022). राजस्थानी चित्रकला, वाराणसी।
4. लूथर, आर. सी. लूथर, सी. के. (2019–2020). भारतीय चित्रकला का संलग्न।
5. अग्रवाल, मधु प्रसाद. मारवाड़ की चित्रकला, नई दिल्ली।
6. पानगड़िया, बी. एल. (1982). राजस्थानी चित्रकला का इतिहास, नई दिल्ली।
7. जयसिंह, नीरज. (1994). राजस्थानी चित्रकला, जयपुर।
8. एरिक, डिकिंसन. (1954). किशनगढ़ पेंटिंग, नई दिल्ली।
9. अग्रवाल, आर. ए. (1977). मारवाड़ म्युरल्स, दिल्ली।
10. चौहान, सुरेंद्र सिंह. (1947). राजस्थानी चित्रकला, दिल्ली।